

सलोकु ॥

करण कारण प्रभु एकु है  
दूसर नाही कोइ ॥  
नानक तिसु बलिहारणै  
जलि थलि महीअलि सोइ ॥१॥

असटपदी ॥

करन करावन करनै जोगु ॥  
जो तिसु भावै सोई होगु ॥  
खिन महि थापि उथापनहारा ॥  
अंतु नही किछु पारावारा ॥  
हुकमे धारि अधर रहावै ॥  
हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥  
हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥  
हुकमे अनिक रंग परकार ॥  
करि करि देखै अपनी वडिआई ॥  
नानक सभ महि रहिआ समाई  
॥१॥

प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥  
प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥  
प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥  
प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥  
प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥  
आपि करै आपन बीचारै ॥  
दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥  
खेलै बिगसै अंतरजामी ॥  
जो भावै सो कार करावै ॥  
नानक द्रिसटी अवरु न आवै  
॥२॥

कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥  
जो तिसु भावै सोई करावै ॥  
इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥  
जो तिसु भावै सोई करेइ ॥  
अनजानत बिखिआ महि रचै ॥  
जे जानत आपन आप बचै ॥  
भरमे भूला दह दिसि धावै ॥  
निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥  
करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥  
नानक ते जन नामि मिलेइ

॥३॥

खिन महि नीच कीट कउ राज ॥  
पारब्रह्म गरीब निवाज ॥  
जा का द्रिसटि कछू न आवै ॥  
तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥  
जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥  
ता का लेखा न गनै जगदीस ॥  
जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥  
घटि घटि पूरन ब्रह्म प्रगास ॥  
अपनी बणत आपि बनाई ॥  
नानक जीवै देखि बडाई

॥४॥

इस का बलु नाही इसु हाथ ॥  
करन करावन सरब को नाथ ॥  
आगिआकारी बपुरा जीउ ॥  
जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥  
कबहू ऊच नीच महि बसै ॥  
कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥  
कबहू निंद चिंद बिउहार ॥  
कबहू ऊभ अकास पइआल ॥  
कबहू बेता ब्रह्म बीचार ॥  
नानक आपि मिलावणहार

॥५॥

कबहू निरति करै बहु भाति ॥  
कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥  
कबहू महा क्रोध बिकराल ॥  
कबहूं सरब की होत खाल ॥  
कबहू होइ बहै बड राजा ॥  
कबहु भेखारी नीच का साजा ॥  
कबहू अपकीरति महि आवै ॥  
कबहू भला भला कहावै ॥  
जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥  
गुर प्रसादि नानक सचु कहै  
॥६॥

कबहू होइ पंडितु करे बख्यान ॥  
कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥  
कबहू तट तीरथ इसनान ॥  
कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥  
कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥  
अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥  
नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥  
जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥  
जो तिसु भावै सोई होइ ॥  
नानक दूजा अवरु न कोइ

॥७॥



कबहू साधसंगति इहु पावै ॥  
उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥  
अंतरि होइ गिआन परगासु ॥  
उसु असथान का नही बिनासु ॥  
मन तन नामि रते इक रंगि ॥  
सदा बसहि पारब्रह्म कै संगि ॥  
जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥  
तिउ जोती संगि जोति समाना ॥  
मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥  
नानक प्रभ कै सद कुरबान  
॥८॥११॥